

## शरद व बसन्तकालीन गने में अन्तः फसल की खेती

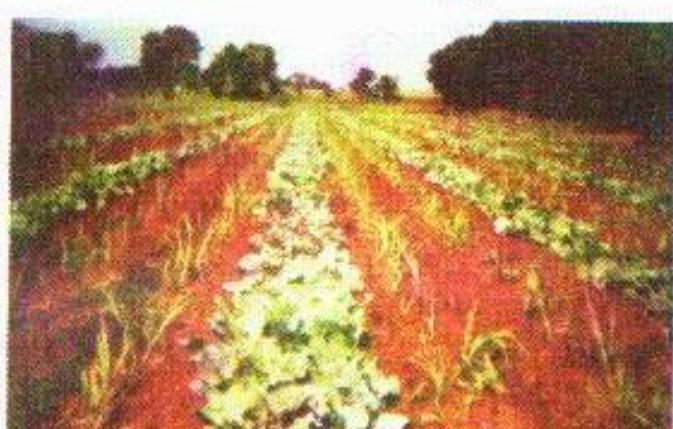
उत्तरी भारत में गना शरद (अक्टूबर) एवं बसन्त ऋतु (फरवरी-मार्च) एवं गर्म ऋतु में बोया जाता है। शरद एवं बसन्तकालीन गने के साथ दो कतारों के बीच की जगह लम्बे समय तक खाली पड़ी रहती है। इस खाली जगह में खरपतवार उगते हैं जो गने की प्रारम्भिक अवस्था में फसल को हानि पहुंचाते हैं। इन खरपतवारों की रोकथाम के लिए किसानों को गुड़ाई करनी पड़ती है। दूसरे कुछ किसानों के पास जमीन कम होती है। उनको अन्य फसले भी लेनी पड़ती है। परीक्षणों से पता चला है कि गने के साथ अन्य फसले भी ली जा सकती हैं। इस विधि द्वारा किसान को अतिरिक्त आमदनी भी हो जाती है तथा खरपतवार का नियंत्रण भी हो जाता है।

**शरदकालीन गने के साथ निम्नलिखित फसलें उगाई जा सकती हैं**

आलू	-	गना	लहसुन	-	गना
टमाटर	-	गना	अलसी	-	गना
फूलगोभी-		गना	सरसों	-	गना
पत्तागोभी -		गना	गेहूँ	-	गना
धनिया	-	गना	मटर	-	गना
प्याज	-	गना	चना	-	गना



चित्र (६)



चित्र (७)



चित्र (८)



चित्र (९)



चित्र (१०)

इसके अतिरिक्त अन्य शरदकालीन सब्जी की फसले भी ले सकते हैं। इसके लिए अतिरिक्त खाद की मात्रा का प्रयोग फसलों के अनुसार करना चाहिए।

बसन्तकालीन गन्ने में कम समय में पकने वाली दलहनी एवं सब्जी की फसलें उगाई जा सकती हैं।

निम्नलिखित फसलें गन्ने के साथ बसन्तकालीन गन्ने में आराम से उगाकर अतिरिक्त आय किसानों द्वारा कर सकते हैं।

मूँग - गन्ना

उड्ढ - गन्ना

लोबिया - गन्ना

राजमा - गन्ना

भिण्डी - गन्ना

निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है :-

१. गन्ने की दो लाईनों के बीच अंतः फसल की निर्धारित लाईने ही बोये। जैसे भिण्डी, लोबिया की एवं लाईन, उड्ढ, मूँग की दो लाईने। अन्य फसलों की लाईने भी बीच की दूरी के अनुसार ही लगायें।
२. अंतः फसल के समय-समय पर निराई-गुड़ाई तथा हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए।
३. आवश्यक उर्बरक जो प्रयोग करना हो सही समय पर प्रयोग करें।
४. अंतः फसल की कटाई के तुरंत बाद गन्ने में सिंचाई व उर्बरक प्रयोग उपरान्त गुड़ाई कर देना चाहिए।